शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी कहानी और ग्रामीण समुदाय : एक अध्ययन

कीर्ति भारद्वाज(शोधार्थी)
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नॉएडा, भारत

शोध संक्षेप

भारत की कुल आबादी का 68 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता है। यदि कहा जाए शहरों की चकाचौंध इन्हीं गाँवों की अँधेरी दुनिया से उत्पन्न होती है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारे देश के गाँव हमारी सामाजिक ,आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की पृष्ठभूमि है। ग्रामीण समाज में जाति व्यवस्था, स्त्री जीवन और कृषक वर्ग की स्थिति नगरीय समाज से भिन्न होती है। इन्हीं स्थितियों को आधार बनाकर हिंदी कहानीकारों ने कहानी के माध्यम से इनकी वास्तविकता से अवगत कराया है।

प्रस्तावना

हिंदी कहानियों में कहानीकारों ने ग्रामीण समाज के तीन वर्गों कृषक वर्ग , स्त्री वर्ग और दलित जाति के ऊपर होने वाले अत्याचारों एवं जुल्म के खिलाफ आवाज उठाई है। ग्रामीण जीवन में समाज जाति -व्यवस्था व्यापक बहुत रूप से फैली हुई है, जिसके कारण निम्न जातियों को दयनीय स्थिति का सामना करना पड़ता है। भले ही संविधान में कितने ही कानून क्यों न बना दिए जाए। ऐसी स्थिति में साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है जो ग्रामीण समुदाय में फैली दूषित जाति -व्यवस्था को मिटा सकता है। प्रेमचंद ने दलित समाज की विसंगतियों को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में गंगा प्रतिदिन शाम को पानी भरकर लाती थी लेकिन अगले दिन जब वह पानी पीती है तो उसमें बदबू आती है। वह सोचती है ,जरूर कोई जानवर कुएं में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आए कहाँ से "1. ये पंक्तियाँ जाति -व्यवस्था को समझने के लिए पर्याप्त है कि दलित समाज को एक स्थान से ही पानी भरने की मंजूरी थी।

कहानियों में ग्रामीण समुदाय

प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम एन श्रीवास्तव का कहना है, "जाति एक अपरिवर्तनीय व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक जाति की स्थिति हमेशा के लिए निश्चित होती है। "2.कहने का अभिप्रायः यह है कि आधुनिक भारत में ये जातियां एक गृहस्थ की तरह जीवन व्यतीत करने की कोशिश कर रहे हैं और जनजातीय समूहों की तरह भटकने को अभिशप्त नहीं हैं। गाँव की संरचना में दलितों की स्थिति को मधुकर सिंह की कहानी 'हरिजन सेवक' में देखा जा सकता है , "हमकुल मिलाकर २० -२५ घर दुसाध हैं और दो घर जुलाहे बाकि सभी वही लोग हैं हमारे बाप - दादे पता नहीं किस जमाने में उन्हीं की सेवा टहल करते चले आ रहे हैं और आज़ादी के बाद भी हम उनके मोहताज़ हैं।" 3. यह कहानी दलितों की स्थिति को बयाँ करती है।

हिंदी साहित्य में दलितों की स्थिति को आधार बनाकर कई महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी है किन्तु

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दलित साहित्य में कहानीकारों की मुख्य रूप से दो धाराएं देखने को मिलती हैं और उनकी पीड़ा एवं दशा को चित्रित करती हैं। इसमें प्रेमचंद , राहुल सांस्कृायन , अमृतलाल नागर आदि तथा दूसरी धारा में वे रचनाकार आते हैं जो स्वयं दलित हैं तथा दलितों की समस्या पर आधारित साहित्य लिखते हैं इनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमि शराय, कंवल भारती, जयप्रकाश कर्दम आदि आते हैं।

इसी प्रकार हरिसुमन विष्ट की कहानी 'आग' जिसमें सवर्णों और दलितों के पानी पीने की व्यवस्था अलग -अलग होती है। जब डूक की झोंपड़ी जला दी जाती है तब उस आग में उसका पूरा परिवार जल जाता है। तब कहानी का नायक डूक कहता है, " हमारी कोई भाषा नहीं, कुआं नहीं, खलियान नहीं। लोग कहते हैं कि कुछ लोग बाहर से झोंपड़ी जला गए थे। मैं कहता हूँ अगर वह बाहर से आये थे तो उनको कैसे पता लगा कि मैं ही छोटी जाति का हूँ । "4.. अर्थात किसी गरीब निम्न जाति की झोंपड़ी गाँव के ही कुछ लोगों ने जानबूझकर जलाई थी। इसी प्रकार मदनमोहन की कहानी 'बच्चे बड़े हो रहे हैं ' में फ़र्ज़ी डकैती का केस दिखाते हुए ठाकुर धर्मवीर सिंह (दरोगा) ने बेकसूर चन्द्र को मार-मार कर अधमरा कर दिया। कभी-कभी इन कहानियों को पढ़कर लगता है कि ऊँच-नीच .का भेदभाव हमारी मानसिकता का अंग बन गया है।

हमारे यहां गाँवों में निम्न जाति की स्थिति ऐसी है कि छुआछूत एवं जाति-भेद के कारण इन्हें गाँव के मुख्य क्षेत्र से बाहर रहना पड़ता है। हमारे संविधान में अनुछेद 14 में समता की बात कही गई है , जबकि अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता निषेध का प्रावधान है फिर भी इन कानूनों का पालन पूरी तरह से नहीं किया जाता है। हिन्दू समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था को रमणिका गुप्ता इस प्रकार देखती है , "हमारी संस्कृति में बहुत कुछ अच्छाईयां भी हैं, लेकिन ये अच्छाईयां केवल एक वर्ग के हितों तक ही सीमित है।"5.कहने का अभिप्रायः यह है कि हमारी संस्कृति में दलितों के साथ शुरू से ही छल किया जाता रहा है। समाज में व्यक्ति की वही जाति है, जिसमें वह पैदा हुए है।

ऐसी ही मिलती-जुलती स्थिति कृषक वर्ग की होती है, जिन्हें हिंदी रचनाकारों ने बड़े ही मार्मिक ढंग से कहानी के द्वारा वर्णित किया है। प्रेमचंद ने 'पूस की रात' कहानी में एक किसान की दशा का वर्णन करते हुए लिखा है , "पूस की अँधेरी रात, आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता झबरा पेट में मुंह डेल सर्दी से कूँ -कूँ कर रहा था ।"6.

विजय कान्त ने मरीधार कहानी में निम्न तबके के एक एक डोम चमकू को , जो कि कहानी का नायक है, जिसके पास अपनी जमीन नहीं है और उसे ठाकुर की जमीन पर ही काम करना पड़ता है। वह सोचता है कि मेरा जन्म क्यों हुआ , जब में पैदा हुआ हूँ तो मेरे लिए जमीन क्यों नहीं ? दिबेन की कहानी हम बेसबां नहीं में स्त्री मजदूर वर्ग की दुर्दशा को दिखाया गया है। कहानी की पात्र किशोरी जब ठेके पर काम करने आती है तब उसकी दोस्ती एक बुजुर्ग काकी से हो जाती है। वह बताती है कि यहाँ पर मैट ने औरतों तथा लड़कियों को ड्यूटी के बहाने उनका कितना यौन-शोषण किया है।

काकी कहती है- "बेटा! अपना घर गया , गाँव गया, माँ-बाप गए, तब इस हाड-माँस के शरीर को सहेजकर कहाँ ले जाती ? सोच लिया- सब कुछ गया तो ये शरीर भी गया। कम-से-कम यहाँ रहते हुए कोई छिनाल तो नहीं कहता। अपनी इज्जत

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तो है।"7.. जब एक औरत मजबूर होती है यदि उसका यौन-शोषण किया जाता रहे तो उसे सहन करना ही उसकी मजबूरी बन जाती है। इसलिए वह इसका विरोध भी नहीं कर पाती।

भले ही भारत का आर्थिक विकास हो रहा है लेकिन यह कहाँ हो रहा है ? यह नहीं पता। यदि आर्थिक विकास हो रहा है तो आज कृषक वर्ग आत्महत्या जैसा कृत्य करने को मजबूर क्यों हो रहे हैं ? यह एक चिंतनीय विषय है। मधुकर सिंह की कहानी 'हरिज़न सेवक' खेतिहर मजदूरों के संघर्ष को व्यक्त करती है। इस कहानी में नायक अन्य मजदूरों के साथ जमींदारों द्वारा उचित मजदूरी न दिए जाने का विरोध करता है - "हमने तय कर लिया है, जब तक हमें रोजाना तीन सेर चावल नहीं मिलता, तब तक हम उनके यहां कोई काम नहीं करेंगे। मालिकों को विश्वास था कि दो -इन दिनों में जब हम भूख से मरेंगे तब हमारा मिज़ाज़ खुद ही ठिकाने आ जायेगा। "8. इस कहानी से स्पष्ट है कि जब खेतिहर किसान अपनी मजदूरी की बात करते हैं या आवाज उठाना चाहते हैं, तब उन्हें किसी न किसी तरह फंसाकर जेल भेज दिया जाता है।

ग्रामीण स्त्रियों का जीवन शहरी स्त्रियों के जीवन से भिन्न होता है। ग्रामीण स्त्रियाँ परिवार के पितृसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा नियंत्रित होती हैं। उन्हें पुरुषों के सामने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता नहीं होती। यदि कोई महिला विधवा हो जाए तो उसकी जमीन पर कब्जे के लिए घर - परिवार का सदस्य उस विधवा स्त्री को रास्ते से हटाना चाहता है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'उज़्दारी' में एक विधवा स्त्री के शोषण को देखा जा सकता है। शांति (विधवा) अपने बेटे से कहती है , "तेरे बाप के मरते ही घर की औरत के कामकाज छीनकर उसे घर से बाहर निकालने का सिलसिला शुरू कर दिया है, जेठ-जेठानी ने।" 9.यह हमारे भारतीय समाज का दोहरा मानदंड है जिससे स्त्री समाज लगातार त्रस्त रहता है इस कहानी में मैत्रेयी पुष्पा स्त्री के प्रतिरोध के साथ -साथ समाज की नैतिक मर्यादाओं पर भी सवाल उठाती है।

ग्रामीण स्त्री का पति यदि उसे छोड़कर भाग जाये तो गांव का पुरुष समाज उस पर फब्तियां कसने से पीछे नहीं रहता। यहां तक कि कई बार उसका यौन शोषण भी किया जाता है इसी समस्या को चरितार्थ करती शिवमूर्ति की कहानी 'तिरिया चरितर' है। इस कहानी में बड़े ही मार्मिक ढंग से एक असहाय स्त्री के यौन शोषण को दिखाने की कोशिश की है। ,चाहे आपस में रिश्ता सास-बहु का ही क्यों न हो वासना की आग में पुरुष इतना गिर जाता है कि उसके लिए नैतिक एवं सामाजिक मर्यादाएं छोटी पड़ जाती हैं जबकि स्त्री के लिए अपनी इज़्ज़त ही सब कुछ होती है। इस कहानी से यह आभास होता है कि ग्रामीण स्त्रीकह सदियों से शोषित एवं पीड़ित है। उनमें अशिक्षा और गरीबी जैसी समस्या है जिसकी वजह से उनका कोई भी शोषण करने से नहीं चूकता। आर.सी. अग्रवाल मानते हैं , "यदि स्त्री के साथ पारिवारिक और आर्थिक जीवन में दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार किया जाता है तो राजनैतिक जीवन में भी वह पूरी तरह नागरिक नहीं बन सकती जबकि हमारा संविधान स्त्री -पुरुष सबको समान अधिकार देता है।"10.

संजीव द्वारा रचित 'प्रेरणास्त्रोत' रचित कहानी में एक दलित स्त्री ,जिसे गांव वाले जंगली बहु कहा करते थे , विरोधों के बावजूद पंचायत का चुनाव जीतती है तो लोग कहते हैं , "कुछ दिनों बाद अपनी खुशफहमी में संशोधन करना पड़ा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और पंचायत का चुनाव जंगली बहु जीत गई। " 11. इन चुनावों के महिलाओं के जीतने के बाद भी सारे निर्णय पुरुषों के द्वारा लिए जाते हैं। इन वर्गों की जिंदगी यूँ तो अच्छी नहीं कही जा सकती। वे अन्याय और अत्याचार सहन करते हैं तो कहीं कुप्रथाओं का भी डटकर मुकाबला करते हैं।

श्रमणिका गुप्ता की कहानी 'बहु जुठाइ' में गाँव की नवविवाहिता को पहली रात ठाकुर के साथ बितानी पड़ती थी। यह गाँव की प्रथा थी। जब इस कुप्रथा का विरोध करते हुए कहानी का नायक कहता है , "हाँ,चाचा ,ई बात का फैसला पहले इन्हें ही करना होगा देख , चचा हमर बॉन फुलमतिया का विवाह तोर बेटवा संग झमेले है , ठाकुर संग नाइ। "12. मुकुंद इस कुप्रथा के प्रति आवाज उठता है एवं सफलता भी प्राप्त करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार ये कहानियाँ महज आनंद के लिए ही नहीं लिखी गई बल्कि समाज में परिवर्तन के लिए लिखी गई हैं। कहानियाँ मुख्य धारा की विशाल पीड़ा एवं आक्रोश को प्रकट कर उनके समाधान के लिए लिखी गई हैं। जिनकी वजह से आज ग्रामीण समाज में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है तो उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई है। हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन मानता है कि व्यक्ति द्वारा किया गया वस्तु या सेवा का उत्पादन चाहे बाजार के लिए हो अथवा खुद के प्रयोग के लिए सभी श्रम के अन्तर्गत आते हैं किन्तु हमारे देश में इस परिभाषा को लागू नहीं गया है। भारत में राष्ट्रीय आय की जो गणना होती है भी उसमें भी स्त्री के श्रम तथा उत्पादकता को राष्ट्रीय आय में माना नहीं जाता जबकि स्त्रियां गाँव में पुरुषों के सहायक के रूप में कार्य करती हैं लेकिन फिर भी आज ग्रामीण श्रमिक वर्ग किसी भी क्षेत्र में काम करने को स्वतंत्र है। वे अब ठाकुर के खेतों पर ही काम करने को विवश नहीं हैं। आज दलित कृषक या स्त्री वर्ग सभी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और आज उनकी परिस्थितियां काफी परिवर्तित हो चुकी हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ प्रेमचंद ,पृष्ठ 84 ,साधना पब्लिकेशन्स ,संस्करण 1998

2. आधुनिक भारत में जाति की भूमिका ,रश्मि चौधरी, पृष्ठ 15, अनुपम प्रकाशन, पटना, संस्करण 2003

3. 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, हरिज़न सेवक, मधुकर पृष्ठ 10 .हिंदी बुक सेंटर .संस्करण 1998

4. आजकल (पत्रिका), हरिसुमन द्वारा संपादित कहानी आग पृष्ठ 8 संस्करण 1998

5.. दलित चेतना साहित्य एवं सामाजिक सरकोर , रमणिका गुप्ता, पृष्ठ 99, भारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2001

6.. पूस की रात ,प्रेमचंद पृष्ठ 266, रजत प्रकाशन देहली गेट, मेरठ-2 संस्करण 1930

7. हम बेसबां नहीं , दिबेन, पृष्ठ 21 ,अयन प्रकाशन ,महरौली ,नई दिल्ली, संस्करण 2011

8 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, हरिज़न सेवक, मधुकर पृष्ठ 31 सस्करण 1999

9..कुशवाहा, उज्रदारी, मैत्रीय पुष्पा, पृष्ठ 93 ,संपादक सुभाष चन्द्र किताबघर प्रकाशन संस्करण 1999

10. बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी विमर्श, डॉ बवन , पृष्ठ 66, विकास प्रकाशन, कानपुर संस्करण 2008

11. प्रेरणा (पत्रिका) प्रेरणा स्रोत कहानी, संजीव, पृष्ठ 34

12. बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी विमर्श , डॉ बवन , पृष्ठ 57,विकास प्रकाशन , कानपुर संस्करण 2008